17. स्वस्ति पन्थामनुचरेम

इस पाठ में वैदिक मन्त्र हैं जिनमें लोक कल्याण की भावना भरी हुई है। वेद पृथ्वी पर उत्पन्न मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए हैं। इनमें वे शाश्वत मूल्य दिए गए हैं जिन पर चल कर हम एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था की रचना कर सकते हैं। वेद का ऋषि जनता को कहता है–

1. संगच्छध्वं... उपासते

यूयम् संगच्छध्वम् = तुम सब साथ मिल कर चलो। एक जैसा चिन्तन हो। एक जैसा मिल कर बोलो। एक दूसरे के मनों को जानो। जिस प्रकार देवगण पहले मिलकर उपासना करते रहे हैं।

2. समानी....सुसहासति

वः तुम्हारे आकूतिः=विचार, संकल्प समान हों। वः=तुम्हारे हृदय समान हों, मन समान हों, जिस प्रकार वः–आपका सु+सह+आसति= सु सह भावनया= समानभावनया=समानभावना से आसति–रहे।

3. स्वस्ति.....संगमेमहे

वयम् सूर्याचन्द्रमसौ इव = हम सूर्य चन्द्र के समान स्वस्तिमार्गम् = कल्याणकारी मार्ग पर चलें। किनके साथ संगति करें? ददता–जो दान देते हैं, अध्नता = जो नाश नहीं करते, जानता = जानने वाले महाज्ञानी हों, हम उनके साथ संगति करें।

4. ईशा.....धनम्

इदं सर्वं ईशा वास्यम् – ईश्वर से व्याप्त है, जगत्यां–संसार में जो कुछ जगत्–गमन शील है – गतिशील है, प्राणमय है, इसलिए त्यक्तेन – त्यागपूर्वक भुञ्जीत=भोग करो, कस्यस्विद्=किसी के धन के प्रति लालच मत करो।

मित्रस्य.....समीक्षामहे

मा=माम्=मुझको सर्वाणि भूतानि–सारे मनुष्य मित्र की दृष्टि से देखें, अहं–मैं, सर्वाणि भूतानि–सब प्राणियों को मित्रस्य=मित्र की चक्षुषा–दृष्टि से, समीक्षे=देखता हूँ। वयम् मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे=हम मित्र की दृष्टि से देखें।

भा भ्राता....भद्रया

भ्राता = भाई भाई से द्विक्षन् = द्वेष न करे। स्वसा स्वसारम्=बहन बहन से (द्वेष न करे) एक मत वाले, सव्रता = एक जैसे इरादे वाले, होकर भद्रया=कल्याणपूर्णा वाचं = वाणी को वदत = बोलो

अस्मिन् पाठे क्रियापदानि

लोट् म. पु. बहु वचन (आत्मनेपद), संगच्छध्वम् = साथ चलो, संवदध्वम् = साथ बोलो, संगच्छत – साथ चलो, साथ बोलो, संवदत = साथ बोलो, संजानताम् = जानें (प्रथम पु. बहु), अस्तु = होवे (परस्मैपद), आसति = रहते हैं (बहु व.)

दानम् – त्रिविधम्

सात्त्विकम्	राजसम्	तामसम्
'जो दान देना ही है' इस उद्देश्य से दिया जाए। अर्थात् दान देने का उचित स्थान, उचित समय, उचित पात्र भी हो, तथा जो अनुपकारी (जिसके बदले में उसके कोई आशा न की जाए) को दिया जाए, वह सात्त्विक है।	1. जो दान प्रत्युपकार के लिए दिया जाए। 2. जो किसी फल की आशा से दिया जाए 3. जो कष्टपूर्वक या किसी अनिच्छा से दिया जाए	1. जो अनुचित देश काल, व कुपात्र को दिया जाए। 2. उपेक्षापूर्वक दिया जाए 3. अवज्ञापूर्वक दिया जाए
अनुपकारिणे – उपकारं करोति = उपकारी के लिए न उपकारी = अनुपकारी तस्मै प्रत्युपकारार्थम्, प्रत्युपकाराय इदम्	(प्रति + उपकार + अर्थम् (परि + क्लिश + क्त परिक्लिष्टम्)	न सत्कृतम् = असत्कृतम् (यत् + दानम् + अपात्रेभ्यः + च) तत् + तामसम् + उदाहृतम् अवज्ञातम् : अवज्ञापूर्वकः उपेक्षा के साथ

तपः त्रिविधम्

शारीरम्	वाङ्मयम्	मानसम्
1. देव-द्विज-गुरु-प्राज्ञ (विद्वान्) एषां सदा सत्कारः	1. उद्वेग/क्षोभरहितं वचनम्	1. मनसः प्रसन्नता
2. पवित्रता (शौचम्)	2. सत्यम्	2. सौम्यता
3. आर्जवम् (सरलता-छल-कपट से रहित)	3. प्रियं हितकरं च	3. मौनम्
4. ब्रह्मचर्यम्	4. स्वाध्यायः	4. इन्द्रियसंयमः
5. अहिंसा	5. स्वाध्यायस्य अभ्यासः स्वाध्याय + अभ्यसनम् न उद्वेगकरम् = अनुद्वेगकरम् च + एव = चैव प्रियं च हितं च	5. भावानां शुद्धिः

क्रियापदानि

लट् – उपासते=उप+आस् लट् प्र. पु. बहुवचन उपासना करते हैं।

विधि – अनुचरेम अनु+चर् विधि. उत्तमपु. एकव. चलें (हम सब), संगमेमहि सम्+ गम् + आत्मनेपद उत्तमपुरुष बहुवचन संगति करें। किसके साथ? ददता-देने वाले के साथ, जानता-जानने वाले के साथ संगति करें।

ईशावास्यमिदं.....यत्किञ्च-जो कुछ जगत्यां-संसार में जगत्-प्राणवान् है वह सब ईशा=(ईश्वर से) व्याप्त है। अतः त्यक्तेन भुञ्जीथाः-त्याग से भोग करो, कस्यचिद्-किसी के धन के प्रति लालच मत करो।

प्रश्नाः

I. निम्नलिखित क्रियापदानां पूर्वं सार्वनामिककर्तृपदानि योजयत-

यथा यूयम् संगच्छध्वम्

(i) ..... संवदध्वम् (यूयम्/वयम्)

(ii) .....उपासते। (ते/सः)

(iii) .....समानम् अस्तु (तत्/ते)

(iv) ..... अनुचरेम (यूयम्/वयम्)

(v) ..... संगमेमहि। (अहम्/वयम्)

(vi) ..... भुञ्जीथाः। (अहम्/त्वम्)

(vii) ..... समीक्षे। (त्वम्/अहम्)

(viii).....वदत (यूयम्/वयम्)

II. निम्नलिखितेषु वाक्येषु रेखांकितपदानामर्थं लिखत।

(i) मित्रस्य <u>मा</u> चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

(ii) <u>मा</u> भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्।

(iii) <u>मा</u> गृधः कस्यस्विद् धनम्।

(iv) समानी <u>व</u> आकूतिः।

(v) सं <u>वो</u> मनांसि जानताम्।

III. निम्नलिखितेषु एकवचने क्रियापदानि चित्वा अर्थं लिखत

क. संगच्छध्वम्, जानताम्, अस्तु, भुञ्जीथाः गृधः समीक्षे, समीक्षामहे, वदत।

ख. निम्नलिखितक्रियापदेषु उत्तमपुरुषस्य क्रियापदानि चित्वा अर्थं लिखत-

अनुचरेम, भुञ्जीथाः, संगमेमहि, समीक्षे, समीक्षन्ताम्, समीक्षामहे, वदत, द्विक्षत्।